ماہنامہ

شعاع عمل

لکھنؤ

دسمبر ۲۰۱۵ء

قَالَ اللّٰہُ تَبَارَکَ وَتَعَالیٰ قَدْ جَاءَ کُمْ مِنَ اللّٰہِ نُوْرٌ وَکِتَابٌ مُبِیْنٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب

حجۃ بن الحسن العسکری

فاطمہ معصومہ

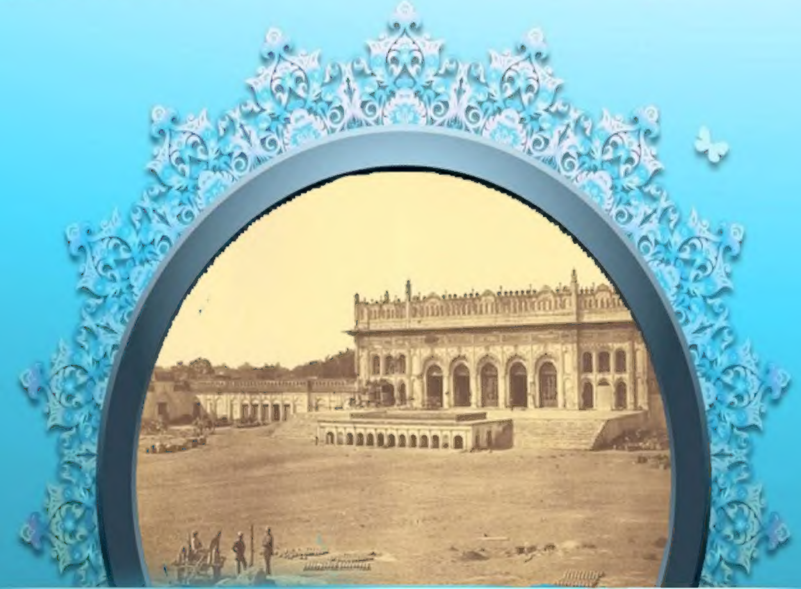
نور ہدایت فاؤنڈیشن، حسینیہ غفرانمآب، چوک، لکھنؤ–۳

R.N.I NO. UPBIL/2004/13526
Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2014-16 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month.

December 2015

Annual Rs. 200/-

Per copy-Rs. 20/-



Imambara sibtainabad lucknow

SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल



हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

Per Copy 20/-
Annual 200/-

बिस्मेही तआला

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की

इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

दिसम्बर 2015 ई०

वर्ष 12 — अंक 6

शुआ-ए-अमल

"लखनऊ"

न्यास संस्थापन

15 जमादिलऊला 1424 हि० / 16 जुलाई 2003 ई०

पत्रिका विमोचन

15 जमादिलऊला 1425 हि० / जुलाई 2004 ई०

मिलने का पता

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत ग़ुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ - 3

Phone No: 0522-2252230 Mobile No: 08736009814 — 09335996808

प्रकाशक मुद्रक: सैय्यद मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी द्वारा स्वामी एस कलबे जवाद नक़वी के लिए निज़ामी प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट अपोज़िट हसनैन मार्केट, चौक, लखनऊ (उ० प्र०) से मुद्रित तथा नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन, इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक लखनऊ (उ० प्र०) से प्रकाशित।
सम्पादक: सैय्यद मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526

▼▼▼

Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10

●●●

WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.org
www.naqeeblucknow.com

E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

वार्षिक अंशदान

1- एक साल के लिए 200/-
2- पांच साल के लिए 800/-
3- लाईफ़ मिम्बरशिप 4000/-

विषय सूची

दिसम्बर 2015 ई०

सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1437 हि०

gtjr+ beke lkfnd+ vkS ¼v0½ vki dk fl;kl h ekgkS

tukc vyh glu S ^^kQ+k**

हज़रत इमाम जाफर सादिक़ (अ0) की विलादत बासआदत 17 रबीअ्–उल–अव्वल को हुई। उस वक़्त अब्दुल मालिक बिन मरवान चौथे उमवी खलीफा की हुकूमत पूरे अुरूज पर थी। और हिशाम बिन इस्माअील उसकी तरफ़ से मदीने का गवर्नर था। यह हुकूमत जब्र व तशद्दुद और ज़ुल्म व तअद्दी में अपनी मिसाल आप थी। इसके गवर्नरों में मोहल्लब और हज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फी जैसे ज़ालिम व सफ़्फ़ाक लोग शामिल थे। ख़ास कर हज्जाज वो ज़ालिम जिसने एक लाख बीस हज़ार इंसानों को जानवरों की तरह ज़िब्ह कराया और हज़ारों लोग उसके क़ैद खानों में थे। इन में औरतें भी थीं। यह ज़माना आले रसूल और इन हज़रात से अक़ीदत व मोहब्बत रखने वालों के लिये बहुत सख़्त था। और आले रसूल की तरफ मैलान रखना सब से बड़ा जुर्म शुमार होता था।

अब्दुल मालिक बिन मरवान, इक्कीस बरस से कुछ ज़ियादा हुकूमत कर के 14 शव्वाल सं0 86 हि0 को राहि–ए–मुल्के अदम हुवा और उसकी जगह उसका सबसे बड़ा बेटा पायः–ए–तख़्ते दमिश्क में ख़लीफः बना।

वलीद भी अपने बाप ही की तरह बहुत बड़ा ज़ालिम व जाबिर था। हज्जाज बिन यूसुफ सकफ़ी का ज़ुल्म व जौर उसके अहदे हुकूमत में भी जारी रहा। वलीद 15 जमादि उल आख़िर सन् 66 हि0 में हलाक हुवा।

हज़रत इमाम सादिक़ (अ0) की उम्र उस वक़्त तेरा बरस थी। आपने इतने दिनों अपने जदे अमजद इमाम ज़ैनुल आबिदीन (अ0) का ज़माना देखा। आप की शहादत बकौल तब्रसी (अ0र0) यौम शंबः 12 मोहर्रम को हुवी (ज़ियादा मुस्तनद तारीख़ 23 मोहर्रम है हमारी तौहीद)

वलीद के बाद उसका भाई सुलैमान बिन अबदु उल मालिक वलीद की मौत ही के दिन तख़्त हुकूमत पर क़ाबिज़ हुवा। यह शख़्स खाने का इन्तिहाई हरीस था। और बहुत खाता था। और इसी बिस्यार ख़ूरी में इसकी मौत हुई। इसकी हिर्स का यह हाल था कि जब उसके सामने भुने हुव मुर्गो के बड़े बड़े तबाक़ आते तो उनके ठंडे होने का इन्तिज़ार किये बग़ैर अपने निहायत क़ीमती रेशमी जुब्बों की आस्तीन से उठा–उठा के खाने लगता। चुनांचे अस्मई ने हारून अब्बासी के सामने जब उसकी कसरते अक़्ल व हिर्स का ज़िक्र किया तो उसने अस्मई के मालूमात की तारीफ़ की और तोशः खाने से उसके रौग़न आलूद जुब्बे निकलवा के उसे दिखाये और जुब्बः उसे अता भी किया।

सुलैमान बिन अब्दुल मलिक बिन मरवान जुमअः 10 सफर सं0 66 हि0 में कसरीन की एक तफ़्रीहगाह दाबिक में बिस्यार ख़ूरी के बाअिस हलाक हुवा। और उसकी वसीयत के मुताबिक उसके चचाज़ाद भाई अुमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को तख़्त नशीन किया गया। इनका सब से बड़ा कारनामा यह हुआ कि पूरी ममलकत में मिंबरों से अमीरुल मोमिनीन और आप की अवलादे अत्हार पर सब व शत्म का सिलसिला बन्द करा दिया। उन्होंने अपने आमिले मदीनः को यह भी लिखा कि ''अवलादे अली व फ़ातिमा पर दस हज़ार दीनार तक़सीम करो कि अरसः–ए–दराज़ से तुम लोगों ने उनके हुकूक़ को रौंदा है'' अलावह बर्री मशहूर है कि उन्होंने फ़िदक भी अवलादे जनाब फ़ातिमा (स0) की तरफ़ वापस किया था।

अुमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की हुकूमत सिर्फ़ दो साल पांच माह और पांच दिन तक रही

और 23 रजब सं0 101 हि0 बरोज़ जुमअः दौरे समआन के मुकाम पर जो हम्स के मुज़ाफ़ात में था उनकी वफ़ात हो गयी। उसी दिन सुलैमान बिन अब्दुल मलिक की वसीयत के मोताबिक उसका भाई यज़ीद बिन अब्दुल मलिक तख़्ते हुकूमत पर क़ाबिज़ हुआ।

इस वक़्त हज़रत इमाम जाफरे सादिक़ (अ0) अुनफ़वाने शबाब के दौर में थे और आप के पिदरे बुजुर्गवार हज़रत इमाम मोहम्मद बाकिर (अ0) की इमाममते हक्कः का अह्द था।

नये ख़लीफ़ः यज़ीद बिन अब्दुल मलिक पर शराब व शबाब का गलबा था। पहले वह सलामः नामी लौंडी पर यूं फरेफ़्तः रहा कि उमूरे सलतनत की कुछ खबर ही न रही। फिर उसकी दादी उम्मे सईद अुस्मानीया ने उसे एक और ख़ूब सूरत लौंडी की तरफ माएल किया ताकि वह सलामः के इश्क से नजात हासिल करके उमूरे सलतनत की तरफ तवज्जुह करे मगर वह इस लौंउी हबाबः के इश्क में ऐसा मुब्तला हुवा कि उसी के ग़म में ख़ुद भी हलाक हो गया। इब्ने तकतका ने अपनी तारीख़ ''अल–फ़ख़्री'' में लिखा है कि वह हबाबः के मुंह में अंगूर के दाने फेंक रहा था कि एक दाना उसके हलक में फंस गया और वह मर गई। खलीफ़ा ने कई दिन उसकी लाश सामनेरखी और प्यार करता रहा। यहां तक के लाश सड़ने लगी तो कहीं ले जा के दफ्न कर दिया और फिर उसके ग़म में चन्द दिनों बाद ख़ुद भी मर गया। यह शाबान 105 हि0 की 25 तारीख़ थी।

यज़ीद इब्ने अब्दुल मलिक के बाद उसके मरने ही के दिन उसका भाई हिशाम उमवी ख़िलाफ़त के तख़्त पर बैठा। यह निहायत दुरूश्त ख़ू, बख़ील और ज़ालिम था। इसने तक्रीबन साढ़े उन्नीस साल हुकूमत की । 6 रबीउल आख़िर 135 हि0 को राही–ए–दारे आख़िरत हुआ। इसी हिशाम ने जनाब ज़ैद (इब्ने इमाम ज़ैन–उल–आबिदीन अ0) को क़त्ल कराया। और उनकी लाश कब्र से निकलवा के सूली पर चढ़ाये रखी। यह सं0 121 या 122 हि0 का वाकिआ है।

हज़रत ज़ैद इब्ने अली इब्ने हुसैन, अपने पिदरे बुज़ुर्गवार की अवलाद में हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ0) के बाद बेहतरीन इंसान थे। वह अपने भाई इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ0) और अपने भतीजे इमाम जाफरे सादिक़ की इमामत के क़ायल थे। हिशाम ने अपने दरबार में बुला के उनकी तौहीन की थी। और वह बनी उमय्या के मज़ालिम से निहायत दिल बरदाशतः थे इसलिये आपने कूफ़े में हिशाम की हुकूमत के ख़िलाफ़ खुरूज किया था। मगर अह्ले कूफ़ः की अक्सरीयत ने गद्दारी की और जनाब ज़ैद शहीद हो गये।

इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ0) को इसी हिशाम ने 114 हि0 में ज़हर दिलवाकर शहीद किया। आप की शहादत माह ज़िलहिज्जः या बकौले माह रबीउल अव्वल 114 हि0 में वाकिअ् हुई और आप की शहादत के बाद आप के जलीलुल क़द्र फ़रज़न्द इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) की इमामत का ज़माना शुरूअ् हुवा।

हिशाम बिन अब्दु–उल–मालिक बिन मरवान बनी उम्मय्या का वह आखिरी बादशाह था जिस की हुकूमत को इस्तिहकाम हासिल रहा। हिशाम बिन अब्दुल मलिक को हुकूमत मिली। यह निहायत फ़ासिक व फ़ाजिर और बेग़ैरती से शराब भी पीने वाला था। वह खुल्लम खुल्ला मोहर्रमात–ए–शरईय्यः पर अमल करता था। यहां तक कि कुरआने मजीद पर तीर बरसाये थे। बिल आखिर बनी उम्मया ही ने उसे कत्ल कर दिया। उस ने सिर्फ़ साढ़े चौदा महीने हुकूमत की। उस के बाद जिल हिज्ज 126 हि0 में यज़ीद बिन वलीद बिन अब्दुल मलिक की बैअत की गयी। जिसने पांच माह हुकूमत की और हलाक हो गया।

यज़ीद बिन वलीद बिन अब्दुल मलिक के मुख्तसर तरीन दौरे हुकूमत के बाद उस का भाई ख़लीफ़ा बना मगर दो या चार माह बाद

उसे माज़ूल कर दिया गया। बनी उम्मया के दौरे हुकूमत के अजीब अय्याम थे जिन में उन का रोबे हुकूमत भी जाता रहा था।

यहां यह बात तारीख़ी हैसियत से याद रखने के क़ाबिल है कि फ़िर्क़ः–ए–मोअतज़लः उस ज़माने में पूरे तौर से ज़ाहिर हो चुका था और यज़ीद बिन वलीद मज्कूर इसी फ़िरक़–ए–मोतजिला के लोगों की मदद से इस काबिल हुआ था कि उसने अपने पेशरव वलीद बिन यज़ीद को उसकी हद से ज़ियादा बे हयाइयों की वजह से क़त्ल किया और खुद ख़लीफ़ा बन गया।

इब्राहीम बिन यज़ीद की हुकूमत को अभी दो चार माह हुवे थे कि मलिक बिन मोहम्मद बिन आख़िरी ख़लीफ़ः–ए–बनू उम्मया ने उस के ख़िलाफ़ लशकर कशी की। वह दमिश्क से भाग गये मगर मरवान ने उसे गिरफ्तार करवा के क़त्ल कर दिया। यह 126 हि0 का वाकिआ है। मरवान बिन मोहम्मद जिस को हिमार (गदहा) कहा जाता है 132 हि0 की इब्तिदा तक हुकूमत करता रहा। फिर इसी साल की 12 रबीउल अव्वल जुमअे के दिन कूफ़े में अबुल अब्बास सफ़्फ़ाह की बैयत की गयी और सलतनते अब्बासिया का आग़ाज़ हुवा।

बनी अब्बास ने लोगों को अपनी तरफ़ बुलाया तो आले रसूल पर बनी उम्मया के हाथों ज़ुर्रियते रसूल पर जो मज़ालिम ढ़ाए गये थे बिल–खुसूस वाक़िअः–ए–करबला और हज़रत ज़ैद की शहादत वग़ैरह के ज़रीअे ही लागों को बनी उम्मया से मुतनफ़्फ़िर किया गया था। लेकिन बनी अब्बास ने अन्दर ही अन्दर ऐसी साज़िश की जिसके नतीजे में ज़ुर्रीयते रसूल के बजाए वह खुद बरसरे इक्तिदार आ गये।

इमाम जाफ़रे सादिक ने सफ़्फ़ाह के बाद उस के भाई मंसूर अब्बासी और दूसरे अब्बासी हुकूमरां का ज़माना देखा। और इसी ने हज़रत को ज़हर से शहीद कराया।

यहां इस वाक़िअे का ज़िक्र दिलचसपी से ख़ाली नहीं है कि अबू सलमा ख़ल्लाल जो कूफ़े में अब्बासियों की तहरीक का दाअी था और इक्तिदार के बाद इन का पहला वज़ीर भी बना और उन्हीं के हाथों क़त्ल भी हुवा, इस ने जब यह देखा कि सफ़्फ़ाह मंसूर के बड़े भाई इब्राहीम को जिन्हें इमाम भी कहा जाता था, बनी उम्मया ने क़त्ल भी कर दिया है तो उस ने एक ही मज़मून के दो ख़त हुकूमत संभालने के बारे में लिख कर मोहम्मद बिन अब्दु र्रहमान बिन अस्लम खादिमे रसूलुल्लाह के हाथों निहायत राज़दारी के साथ मदीने भेजे। क़ासिद को हिदायत की कि वह पहले इमाम जाफ़र सादिक (अ0) के पास जाये अगर आप उस की पेशकश कुबूल कर लें तो दूसरा ख़त फ़ाड़ डाले। लेकिन अगर इमाम कुबूल न फ़र्मायें तो दूसरा ख़त लेकर वह अब्दुल्लाह बिन हसन के पास जाये। अबु सलमा इस तरह हुकूमत को बनी अब्बास से निकाल कर आले अबू तालिब की तरफ़ लाना चाहता था उस ने क़ासिद को हिदायत कर रखी थी कि इन दोनों साहिबान में से कोई भी अगर हुकूमत का तलबगार हो तो वह जल्द से जल्द उस के पास वापस पहुंचे।

यह क़ासिद रात की तनहाई में इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) से मिला और कहा ''मैं अबू सलमा का ख़त लेकर आया हूं'' इमाम ने फर्माया ''अबू सलमा से मेरा कया वासिता ? वह हमारे शीओं में नहीं है'' ''आप ख़त मुलाहज़ा कर के जवाब तो दे दें'' क़ासिद ने अर्ज़ की। इमाम ने चराग़ मंगवाया और ख़त लेकर चराग पर रख दिया यहां तक कि वह राख हो गया फिर क़ासिद से फ़र्माया ''बस यही इस का जवाब है।''

तब क़ासिद अबू सलमा की हिदायत के मोताबिक अब्दुल्लाह बिन हसन से मिलां उन्होंने दावत कुबूल कर के क़ासिद को रवाना कर दिया। सुब्ह के वक़्त वह इमाम (अ0) के पास आये और खुश हो के सारा वाक़िअः सुनाया।

¼ckdh is u0 16 ij]]]]]]]]]]]]]]]]]]]]]]]]]]]½

bLyke vkSj cnyrs t+ekus ds rdkts+

MkW0 ekSykuk l¸;n dYcs lkfnd+ lkgc

ज़माना एक समुद्र के समान है। कभी यह समुद्र शान्त था। कभी–कभी लहरें उठती थी, मगर थोड़ी दूरी में और थोड़ी दूर के लिये। अब इस समुद्र में मुस्तक़िल, अनवरत तूफ़ान है जो हर घाट से टकरा रहा है। नई–नई लहरें हैं, नयी–नयी आंधियाँ हैं, नये–नये तूफ़ान हैं। ये तूफ़ान न मअ्लूम कितनी कश्तियों को डूबो चुका और कितनों को डूबोने के क़रीब कर चुका। सवाल यह है कि इस तूफ़ान से मुक़ाबला करके मुक्ति के घाट तक पहुँचने के लिये क्या कोई मज़बूत, सुदृढ़, विशाल जहाज़ है कि नहीं ! जवाब बहुत खुला हुआ है कि है और निश्चित रूप से है। इसी जहाज़ का नाम है इस्लाम। तूफ़ानी समुद्र से गुज़र के मनचाही मंज़िल तक हम इस जहाज़ के ज़रीअे पहुँच सकते हैं जिसमें ऐसा मज़बूत इंजन हो जो सफ़र का नर्म–गर्म झेल सके। ऐसे आले (उपकरण) हों जो यात्रा–दिशा निर्धारित कर सकें। ऐसा लंगर हों जो तूफ़ान में जहाज़ को संभाले रह सके। निश्चय ही ऐसा जहाज़ हम को सुरक्षा के साथ तूफ़ानी समुन्दर पार करके मुक्ति के घाट तक पहुँचा सकता है लेकिन उसके साथ ज़रूरी है कि इस जहाज़ का अमला (कार्यकर्ता) भी ऐसा हो जो एक तरफ़ जहाज़ की पूरी व्यवस्था पूरी मशीनरी, सभी कल पुर्ज़ों और सबके काम में लाये जाने के अवसर से पूरी तरह आगाह हो, अवगत हो तो दूसरी ओर इस समुद्र के भूगोल (ज़ियोग्राफ़िया), इस इलाके के मौसम और समुद्र में छिपी हुई चट्टानों और जोखिम से भी आगाह हो। जहाज़ के हर तरह मुकम्मल होने के बावजूद भी हम लक्षित मंज़िल तक उसी वक़्त पहुँच सकते हैं जब अमले में आखिरी दोनों गुण साथ–साथ पाये जाते हों। अगर इनमें से कोई एक गुण भी न पाया जाये तो डूब जाने का ख़तरा है।

इस्लाम वह जहाज़ है जिसके अनेक मॉडल, अनेक पैग़म्बरों के द्वारा सामने आते रहे। इसमें तरक्की होती रही। यहाँ तक कि इस्लाम के अन्तिम पैग़म्बर हुज़ूर करीम (स0) ने इसे आखिरी शक्ल देके, इसे इस लायक बना दिया कि यह अपने यात्रियों को हर समुद्र में और हर तूफ़ान से बचाता हुआ, इच्छित मंज़िल तक पहुँचा दे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि जहाज़ हर तरह मुकम्मल है और हर कमी और दोष से दूर है लेकिन प्रश्न हे उसके अमले के बारे में। यह अमला जो उस पर इस वक़्त सवार है, उसकी दशा यह है कि इनमें कुछ तो ऐसे निकम्मे बेपढ़े–बेकढ़े हैं जिनको न जहाज़ की जानकारी है और न समुद्र की आगाही। कुछ वो हैं जो जहाज के कल–पुर्जो से तो वाक़िफ़ हैं मगर समुद्र से अनभिज्ञ, कुछ वो हैं जो समुद्र के जानकार हैं मगर जहाज़ से नावाकिफ़। ज़ाहिर है कि अमला अगर इस ठाट का हो तो मुसाफ़िरों का अंजाम मअ्लूम है। हमारे मुसलमान कर्णधारों का यही हाल है। हमारी अक्सरीयत (बहुसंख्या) तो वह है जिसे न उस दीन की खबर है जिसे वो मान रहे हैं, न उस दुनिया की ख़बर है जिसमें वह रह रहे हैं। कुछ विद्वान अगर दीन के बारे में जानते भी हैं तो दुनिया ज़माने से बेखबर हैं और हमारे बुद्धिजीवी और दानिश्वर अगर वक़्त के तक़ाज़ो से आगाह हैं तो दीन के मामले में कोरे।

यही वो लोग हैं जिन्हें वक़्त के तक़ाज़ों और इस्लाम के उसूलों में टकराव नज़र आता है और उनकी समझ में नहीं आता कि इस टकराव को क्योंकर दूर करें। नयी–नयी ईजादों के साथ नयी–नयी सोच, नये–नये ख़याल के और नयी

विचारधाराओं से भी आँखें बन्द किये रहें और इस्लाम के ख़याली अक़ीदों, मान्यताओं और सिद्धान्तों को सीने से लगाये रहें या इस्लाम को विदा करके ज़माने के फ़ैशन में बह जायें या कोई समझौतापरक (Compromising) रवय्या अपनाया जाये ! इस्लाम के उसूलों और ज़माने के तक़ाज़ों में टकराव सिर्फ़ उन्हीं लोगों को दिखाई देता है जो या इस्लाम की वास्तविकता और शिक्षा से अपरिचित हैं या जिनमें इतनी बसीरत (अन्तर्दशिता) न हो कि ज़माने की वास्तविक व वैज्ञानिक प्रवृत्ति और समय के भटकाव, कुमार्गी बल्कि बेराह रवियों में भेद न कर सके। **u;s tekus esa lkbUl vkSj VsDuksykWth us lH;rk vkSj laLd`fr dh Qgjoksa esa u;h&u;h D;kfj;ka yxk;h gSaA ysfdu bu D;kfj;ksa esa Qyksa ds vxy&cxy dkaVsHkh gSaA geas bl Qgjoksa dh lqUnjrk ls ykHk mBkuk gS] gesa bu D;kfj;ksa ls ykHk mBkuk gS exj nkeu dks rkj&rkj gksus ls cpkuk Hkh gSA**

वो साहिबान जो इस्लाम की असलीयत से नाआश्ना हैं, अपरिचित हैं, ज्ञान–विज्ञान की हर तरक़्क़ी ओर हर नयी चेतना और विचार से बिदकते हैं और हर नयी चीज़ को इस्लाम का दुश्मन समझने लगते हैं। इस गिरोह के सामने मुक्ति के दो ही मार्ग हैं या तो अपने ख़याली इस्लाम को सीने से लगा के ज़िन्दगी की प्रत्येक वैचारिक और वैज्ञानिक प्रगति से आंखें बन्द कर ली जायें या फिर ज़माने के सामने बिल्कुल हथियार डाल के इस्लाम को गये बीते इतिहास का एक पन्ना बना दिया जाये। जो लोग युग से अपरिचित हैं और बस युग से धौंस खाये हुए हैं उनकी मांग है कि इस्लाम को भी ईसाई मत की तरह समय के साथ समझौतापरक बल्कि मन्त्र ले लेने वाला चलन अपना लेना चाहिये। चुनांचे ईसाई पादरियों ने समय के हाथ पर ''बैअत'' करके ही हर दुराचार, अश्लीलता, विलासिता और कामलिप्ता अर्थात् हर बद अख़लाकी फ़हाशी और अय्याशी और जिन्सपरस्ती की हर शक़्ल को मज़हबी जवाज़ (धर्मोचित का पर्वाना) एवं दीन क़रार दिया है। रह गये गिनती के चन्द बाबसीरत, अन्तर्दर्शी लोग जो इस्लाम के यथार्थ से भी परिचित हैं और समय का बोध भी रखते हैं, वह ख़ूब समझते हैं कि समय के तक़ाज़ों और इस्लाम के यथार्थ के बीच टकराव का वजूद ही नहीं, जड़ बुनियाद ही नहीं। वह जानते हैं कि यह टकराव सचमुच है ही नहीं बस दिखायी भर देता है । इस ऊपरी टकराव की तह में कुछ ग़लत फ़हमियां हैं, भ्रम हैं।

वह लोग जो इस्लाम से अपरिचित हैं, उनको यही ग़तलफ़हमी है कि वह इस्लाम के विधायन यअ्नी क़ानूनसाज़ी के बुनियादी उसूलों और अमली और फ़िक़ही मसायल अर्थात् व्यावहारिक आरै धर्मविधिक प्रकरण को एक ही दर्जा दे देते हैं। हालांकि सच्चाई यह है कि इस्लाम में जो चीज़ नाकाबिले तब्दीली है, यअ्नी जो चीज़ अपरिवर्तनीय है वो उसका मूल सिद्धान्त। रह गये फ़ुरूआी और अमली मसायल, तत्वसम्बन्धी और व्यवहारिक प्रकरण तो ऐसे सवालों के लिये इस्लाम में ऐसी लचक रखी गयी है कि इस्लाम के चौखटे के अन्दर रहते हुए विभिन्न परिसिथतियों में मसायल की ऊपरी सूरत–शक़्ल में मअ्मूली फेरबदल के साथ यह हमेशा क़ाबिल–ए–अमल है, सदैव व्यवहारिक हैं मगर रूपरेखा में यह फेरबदल किसी अरूण सूरी या आ़रिफ़ मोहम्मद ख़ाँ का हक़ नहीं, यह सिर्फ़ उन्हीं वक़्त के मुज्तहिदों का हक़ है जो इस्लाम के गहन बोध के साथ–साथ समय के तक़ाज़ों से भी, जैसा चाहिये वैसा आगाह हों, अवगत हों।

इस्लाम में विधायन के मौलिक सिद्धान्त ऐसी आफ़ाकी और दायमी हक़ीक़ते हैं? ऐसे सार्वभौमिक और सर्वकालिक यथार्थ हैं जिनमें फेरबदल असम्भव है, न कोई उनके बदलवाने की मांग की हिम्मत कर सकता है। इस्लाम के विधायन का आधार दो सिद्धान्तों पर है–

1–कोई बात अक़्ल के ख़िलाफ़ नहीं हो

सकती।

2–कोई बात अद्ल(न्याय) के ख़िलाफ़ नहीं हो सकती।

खुली बात है कि यह दोनों उसूल ऐसे पायेदार और दायमी हक़ीक़तें यअ्नी ऐसे ठोस और सदैव बने रहने वाले यथार्थ की हैसीयत रखते है। कि न इनको बदलना सम्भव है और न कोई भी व्यक्ति चाहे धर्म का पक्षधर हो या विपक्षी, इनको बदलवाने की मांग कर सकता है।

इस्लाम के हर क़ानून के सहीह और ग़लत होने के यही दो मेअ्यार–मानदण्ड हैं। इन्हीं के मुताबिक होने या न होने पर किसी धारा के वैध अथवा अवैध (Valid or Unvalid) होने का इनहिसार होता है– निर्भरता होती है।

फ़िक़्ह की तारीख़, धर्मविधि के इतिहास पर नज़र रखने वाले लोग यह बात भली भाँति जानते हैं कि हमारे पैनी दृष्टि वाले आलिमों ने हमेशा अपनी ज़िम्मेदारी महसूस की है कि अगर मुसलमान किसी इस्लामी क़ानून का ग़लत इस्तिअ्माल करके अक़्ल या अद्ल की बुनियाद को मजरूह करने लगें, बुद्धि या न्याय के आधार को क्षतिग्रस्त बनाने लगें तो ऐसे समय के लिये उन्होंने अपने फ़तवों, व्यवस्थाओं द्वारा इस क़ानून में ऐसी हदबन्दियाँ, फेरबदल या व्याख्यायें कर दी है कि क़ानून फिर सीधा खड़ा हो जाय। इस तरह समय की प्रगति से जो नये–नये सवाल सामने आये, उनका हल भी इन्हीं दो बुनियादी उसूलों की रोशनी में ढूंढ निकाला गया। क़ानून में लचक और 'इज्तिहाद'' यही वह दो चीज़े हैं जो इस्लाम के क़ानून की हमेशगी और दवाम की ज़ामिन हैं, यअ्नी उसके सदैव बने रहने की ज़िम्मेदार हैं।

आज के दौर में बेशक नये–नये सवाल तेज़ी से उभर रहे हैं मगर इसमें घबराने की क्या बात है। यही दशा उस वक़्त भी थी जब इस्लाम अपने इब्तिदायी दौर से लेके सातवीं–आठवीं सदी हिज्री तक तेज़ी से दुनिया में फैल रहा था। इस फैलाव के नाते विभिन्न संस्कृतियों, मुख्तलिफ़ तहज़ीबों से आमना–सामना हुआ, अनेक विचारधाराओं से आगाही हुई, अनेक सभ्यताओं से दुआ–सलाम हुआ। इस परिस्थिति में नित्यदिन नये सवालों का सामना होता था, नये–नये विचार सामने आते थे मगर इस्लामी फ़िक्र ने बिना किसी भी स्त्रोत की सहयता लिये हुए अकेले इस चुनौती का कामयाबी से मुक़ाबला किया।

यह था उन हज़रात के ख़यालात का ताजज़ियः, यह थी उन हज़रात के विचारों की विवेचना जो इस्लाम से अनभिज्ञ थे वह अनभिज्ञ हैं, इसलिये भयभीत है, धौंस खाये हुए हैं। इसी ज़ह्नी मरअूबीयत, मानसिक रूप से भयभीत होने का फल है वि वह हर नयी चीज़ को सीने से लगा लेने के लिये बस इसलिये तय्यार हो जाते हैं कि वह नयी है। हालांकि अगर वह तनिक भी ध्यान दें तो यह बात खुल जाये कि यह ज़माना साइंस और टेक्नालॉजी के ज़रीये जहां हमारे लिये बरकतें लाया है, वहीं बलायें भी लाया है। साइन्स अगर हमारे लिये बरकत और मांगलिकता ला रही है तो बलायें और बवाल भी ला रही है। साइन्स ने अगर इन्सान को आगे बढ़ाया है तो इसी साइन्स की ही बदौलत इन्सानों की तख़रीबी सलाहियत, विध्वंसकारी क्षमता, में भी बढ़ोत्तरी हुई है। साइन्स के द्वारा इन्सान असीमित ऊँचाइयों तक पहुँचा है तो इसी के द्वारा पस्तियों में भी गिरा है।

अन्तदृष्टि वाला मुसलमान ज़माने के धौंस–बट्टे का शिकार नहीं है। इसीलिये जब उसके सामने सवाल आता है कि समय के साथ हो ले या उससे विमुक्त हो जाये तो उसका जवाब होता है कि समय तुम पर हाकिम नहीं तुम समय पर हाकिम हो। ज़माना इन्सान बनाने वाला नहीं, इन्सान ज़माना बनाने वाला है। समय इन्सान को नहीं बनाता, इन्सान समय को बनाता है। जानवर और इन्सान में अन्तर ही यह है कि जानवर समय के अधीन है। इन्सान समय का अधिकारी है। ज़माना इन्सान को नहीं बदला करता यह ख़ुद ज़माने को बदला करता है।

इन्सान ज़माने की यात्रा–दिशा में बदलाव करता रहता है। यह बात अलग है कि कभी यह बदलाव भलाई की ओर होता है तो कभी बुराई की ओर। कभी रचना की ओर होता है कभी विध्वंस की ओर इसलिये हमारा धर्म है कि हम अपने विशेषता–दयक गुण यअ्नी बुद्धि से कभी हाथ न उठायें, हर्गिज़ दस्तबरदार न हों। हमेशा आंख खुली रखें और यह सोच विचार करते रहें कि नई। ईजाद हो या नई सोच या नया विचार इसका रूख़ किधर है, इसकी यात्रा–दिशा किधर है? यात्रा–दिशा भलाई की तरफ़ हो, निर्माण की ओर हो तो बस यहीं नहीं कि उसे स्वीकार करलें बल्कि उसके फैलाने में मददगार बनें। यात्रा–दिशा बुराई की तरफ़ हो, विध्वंस की तरफ़ हो तो मात्र यही नहीं कि उसको रद्द कर दें बल्कि उसके मुक़ाबले के लिये डटकर खड़े हो जायें।

इस मंज़िल तक पहुंच के स्वाभाविक रूप से यह सवाल पैदा होता है कि वह मेअ्यार क्या होगा, मानदण्ड क्या होगा जिसके लिहाज़ से फ़ैसला किया जा सके कि समय की कौन सी ईजाद, कौन सा बदलाव, कौन सा नया नज़रिआ, रचना और विकास की दिशा में है और कौन सी ईजाद, कौन सा बदलाव, कौन सी विचारधारा विघटन और पतन की दिशा में है और इन्हिराफ़ की अथवा पथ से विमुक्त हो जाने की हैसियत रखता है।

इल्म व अक़्ल ख़ैरे महज और हवा, हवस, नफ़्स परसती शरे महज़ हैं अर्थात् बुद्धि और ज्ञान विशुद्ध रूप से भलाई और लोभ लालच, कामलोलुप्ता, विशुद्ध रूप से बुराई है। इसे एक उदाहरण से समझने में सुविधा होगी।

केमेस्ट्री विज्ञान की एक शाखा है, इसके विकास से इंसानियत को ज़बरदस्त लाभ पहुँचे। क़ीमती दवायें ईजाद हुई जिससे बीमारियाँ क़ाबू में आयीं। इन्सान की आयु दर (औसत उम्र) में बढ़ोत्तरी हुई, बहुत सी तकलीफ़ों से नजात मिली। यह प्रगति बेशक विशुद्ध विज्ञान की प्रगति है। ख़ालिस साइन्स का कारनामा है। मगर रसायन विज्ञान की इसी प्रगति का एक रूख़ यह भी है कि एक लोभ और लालच का शिकार काम लोलुप्त व्यक्ति आगे बढ़ा ओर उसने इसी साइन्स से लाभ उठा के ''हिरोइन'' ईजाद कर ली, जिसका नशा सबसे ज़ियादा यातनादायक माना जाता है। इसका आ़दी मर्द हो या औरत हर चीज़ दांव पर लगाकर इसकी एक ख़ूराक हासिल कर लेना चाहता है। कितनी ज़िन्दगियाँ हैं जो इसने बरबाद कर रखी हैं। सारी दुनिया में हिरोइन की ईजाद भी साइन्स ने ही की है मगर यह ईजाद साइन्स से, विशुद्ध साइन्स से पैदा नहीं हुई। यह पैदाइश मिलावटी साइन्स बल्कि क़ैदी और गुलाम साइन्स की पैदावार है। वह साइन्स जो काम लोलुपों के हाथों में क़ैद है, उनकी गुलाम हैं।

फ़िज़िक्स साइंस की एक दूसरी शाखा है। इस साइंस में रौशनी की हक़ीक़त मुद्दतों से जांची जा रही थी। भौतिक विज्ञान में प्रगति हुई तो ''प्रकाश'' स्वतः रौशनी में आया। छिपे भेदों से पर्दे उठे तो कैमरा ईजाद हुआ, तस्वीरें खिंचने लगीं, प्रगति और बढ़ी तो फिल्में बनने लगीं। इन ईजादों से इन्सान की कार्यक्षमता में बढ़ोत्तरी हुई। अपूर्व लाभ प्राप्त हुआ मगर अचानक एक धनपशु उठ खड़ा हुआ और उसने इस ईजाद के द्वारा अशिष्ट सिनेमा फ़िल्में बनाना शुरू कर दीं। सिनेमा उद्योग स्थापित हो गये। इन फ़िल्मों में केन्द्रीय हैसियत यौन सम्बन्ध की दी गयी जो इन्सान की सबसे बड़ी कमज़ोरी है। नतीजा यह हुआ कि फ़िल्म बनाने वाले करोड़पति होते गये और फ़िल्म के शौक़ीन आर्थिक और नैतिक दृष्टि से दिवालिया होने लगे।

आइन्सटीन ने ''एटमी ताक़त'' (परमाणु शक्ति) का आविष्कार करके इन्सान की क्षमताओं को ज़मीन से आकाश में पहुँचा दिया मगर ख़ुद आइन्सटीन उन समारोहों में रो–रो दिया जो उसके सम्मान में हुए थे। वह रोया है इस पर कि अगर उसको मअलूम होता कि उसका आविष्कार

इन्सान के हाथ में ''एटम बम'' ऐसा हथियार दे देगा तो वह इस अनावरण से बाज़ ही रहता। परमाणु शक्ति का अनावरण विशुद्ध और स्वतन्त्र साइंस की तरक़्क़ी का कारनामा है और एटम बम की ईजाद में लोभी, धूर्त, मक्कार, मानवता के शत्रु राजनीतिज्ञों की मलिच्छ भावनाओं का विष घुला हुआ है। यह काम भी साइन्स का है मगर स्वतन्त्र साइन्स का नही।, उस साइन्स का है जिसके पाँव में बेड़ी पड़ी हुई है जो बन्दी है, दासी है।

परिस्थिति यह है, आज का नअ्रा यह है कि आज का ज़माना साइंस का है, आज साइंस के शासन का दौर है। मगर वास्तविकता यह है कि यह दौर साइंस की हुकूमत का नहीं, उसकी गुलामी का दौर है।

आज साइंस क़ैदी तो है ही बेचारे बड़े–बड़े साइंसादाँ भी मुस्तक़िल पहरे–चौकी में रहते हैं कि उनका ज्ञान दूसरों तक न पहुँचने पाये। ईजादों का प्रतिफल आविष्कारकों को वैसा ही मिल रहा है जैसे उस परम्परागत मेअ्मार को मिला था जिसने किसी बादशाह का महल बनाया था। उसे प्रतिफल यह मिला था कि बादशाह सलामत ने उसके हाथ कटवा दिये थे कि किसी दूसरे के लिये ऐसा महल न बना सके। उसका इन्आम हाथों का काटा जाना था, यहाँ इन्आम गिरफ्तारी और क़ैद है। हद यह है कि निकट सम्बन्धियों से भी आज़ाद मुलाक़ात की इजाज़त नहीं होती कि कहीं कोई वैज्ञानिक भेद ग़ैरों तक न पहुँच जाये।

सारांश यह कि साइंस की ही ईजाद, दवायें भी हैं हीरोइन भी (साइंस ही की ईजाद कैमरा भी है और अशिष्ट फिल्में भी)। साइन्स ही का कारनामा ''एटमी ताक़त'' का अनावरण भी है और ''एटम बम'' भी। मगर इनमें पहले बताई गयी चीज़ें शुद्ध साइंस, स्वाधीन साइन्स का फल है और आख़िर में बताई गयी चीज़ें मिलावटी साइंस का नतीजा हैं। इस्लाम कहता है कि हर वह चीज़ जो स्वतन्त्र और शुद्ध साइंस का फल हो उसे ले लो बल्कि उसे फैलाओ और हर वह चीज़ जो आलूदा साइंस का नतीजा है, उसे रद्द करो बल्कि उसके मुक़ाबले के लिये खड़े हो जाओ ताकि इन्सानी तहज़ीब व तमददुन, मानवीय सभ्यता एवं संस्कृति का सफ़र ठीक दिशा में रहे। विमुखता न पैदा होने पाये। इन्सान ऊंचाईयों में जाये नीचे न गिरे।

विज्ञान की ही एक शाखा मानोविज्ञान (नफ़सीयात–Psychology) भी है। इस मनोविज्ञान ने इन्सान को बहुत कुछ बताया, बहुत कुछ सिखाया है। इसके कई शुअ्बे हैं, कई सम्भाग हैं। जिनमें से एक के द्वारा इन्सान के दिमाग़ को प्रभावित करने के नये–नये तरीक़े ईजाद हुए हैं। आज वही तरीक़े अपना के वह बातें जो बच्चों को महीनों में सिखाई जाती थी वह घण्टों और मिनटों में सिखा दी जाती हैं यह विशुद्ध मनोविज्ञानिक कीर्ति है, ख़ालिस नफ़सीयाती कारनामा है मगर स्वार्थी, लोभी, धन–दौलत के पुजारी, सत्तापूजक और कामलोलुप, अपने लोभ–लालच की संतुष्टि के लिये, धन बटोरने के लिये, शासन करने या उसे बनाये रखने के लिये, प्रोपोगण्डो, प्रचार–प्रसार में इसी मनोविज्ञानो से काम लेके दुनिया को तबाही के गड्ढे में ढकेल रहे हैं। पहली सूरत मनोविज्ञान के ठीक दिशा में सफ़र करने की है। दूसरी ग़लत दिशा में सफ़र करने की।

आज के दौर में जिस तरह नित्यदिन कोई न कोई नई ईजाद सामने आती है, उसी तरह नित्यदिन एक नये विचार, एक नये फ़ैशन, एक नयी विचारधारा से सन्मुख होना पड़ता है, भौतिक ईजाद को या नवचेतना या आधुनिक दृष्टिपूर्ण, इसके स्वीकारने बल्कि फैलाने या रद्द करने बल्कि मिटाने के सिलसिले में वही सिद्धान्त काम करता रहेगा। शुद्ध ज्ञान–विज्ञान हो तो स्वीकार करलें और फैलायें और लालच काम लोलुप्ता, सरकार परस्ती, धन पूजा की मिलावट दिखायी दे तो रद्द कर दें बल्कि उसे मिटाने का प्रयत्न करें और विचार और दृष्टि के बारे में हमको बहुत अधिक होशयारी की ज़रूरत है।



माँओं, बहनों, बेटियों ! इस दुनिया में करोड़ों इन्सान ऐसे पाये जाते हैं, जो अपने को 'मुसलमान' कहते हैं। मगर जिस दुनिया को हम इस्लामी दुनिया के नाम से याद करते हैं, उसका हाल बिल्कुल एक चिड़ियाघर के ऐसा है जहां नाना प्रकार का जानवर भाँति भाँति की बोलियाँ बोलने वाला मौजूद होता है। प्रायः ऐसा ही हाल मुसलमानों की दुनिया का भी है कि उसमें तरह तरह के आदमी इकट्ठा हैं। ऐसे भी जिन्हें ईश्वर के अस्तित्व में शुब्हा है, ऐसे भी जिनको 'वह्य और पैग़म्बरी' में शंका है, ऐसे भी जो परलोक का इनकार करते हैं और यह बात नहीं मानते कि मृत्योपरान्त खुदा की अदालत में कभी इस जीवन का हिसाब देना है। इनमें वह भी हैं जो भलाई और बुराई की उस पहचान से इन्कार करते हैं जिसकी सीख इस्लाम ने दी है। वह भी जिनकी निगाह में हस्लाम की सिखाई जीवन पद्धति दुरूस्त नहीं है। यह सब कुछ करने के बावजूद वह अपने आप को 'मुसलमान' कहते हैं और वह सभी अधिकार प्राप्त करना चाहते हैं जो मुसलमानों की सोसाइटी में एक मुसलमान ही को हासिल हो सकते हैं। इस बटोर में बहुत थोड़े लोग ऐसे पाये जाते हैं जो वास्तव में इस अर्थ में मुसलमान है जिस अर्थ में इस्लाम किसी को मुसलमान कहता है।

vpSU; eqlyeku%& आख़िर यह परिस्थिति क्यों हैं। इसका कारण इसके सिवा कुछ नहीं हैं कि हमारा मुसलमान जगत अधिकतर वंशीय मुसलमानों पर सम्मिलित है। जो बस इस कारण मुसलमान हैं कि उसके बाप दादा' मुसलमान थे। आप अगर गम्भीरता से सोचें तो यह तथ्य आप पर स्पष्ट हो जायेगा कि इन्सान को जन्म द्वारा वर्ण मिल सकता है, राष्ट्रीयता मिल सकती है परन्तु किसी को मात्र जन्म द्वारा 'इस्लाम' नहीं मिल सकता। दीन तो केवल इसी तरह मिल सकता है कि आदमी जानबूझ के उसे पसन्द करे और अपने इरादे और अपनी इच्छा से उसको ग्रहण करे। यही कारण है कि हममें जो लोग वंशीय मुसलमान हैं और मात्र–बाप दादा के घर की बदौलत इस्लाम से निस्बत मिली है, उनके पास मुसलमानों के नाम तो हैं लेकिन वह गुण उनमें नदारद हैं जिनका नाम इस्लाम है। उनके सामने वह जीवन पद्धति है ही नहीं जिसका नाम इस्लाम है। उनके सामने वह जीवन पद्धति है ही नहीं जो इस्लाम ने उनके लिए सुझाई है। उन्होंने न कभी उसे जानने की कोशिश की है न कभी उसे अपने लिये पसन्द किया है और न उन पर चलने का इरादा किया है। हालांकि इस्लाम की जो वास्तविकता हज़रत पैग़म्बर (अ0) ने बताई है वह यह है, ''ईमान का मज़ा चखा उस शख़्स ने जो इस पर राज़ी हुआ कि अल्लाह ही उसका पालनकर्ता और हज़रत मोहम्मद उसके पथ प्रदर्शक हों और इस्लाम ही उस की जीवन पद्धति हो।''

इस हदीस की रौशनी में यह बात स्पष्ट हो जाती है कि जिसने सोच समझ के हँसी–खुशी इस्लाम ग्रहण नहीं किया वह इस्लाम के स्वाद तक से अपरिचित है। उसने दीन का स्वाद चखा ही नहीं।

eqlyeku gksus dk vFkZ%& मुसलमान होने के मानी यह हैं कि एक आदमी पूरी चेतना के साथ यह फ़ैसला करे कि दुनिया में ईश्वरत्व पालनकर्ताई और मालिक होने के जितने दावेदार पाये जाते हैं, उन सब में से सिर्फ़ एक, प्रत्येक लोक के पालनकर्ता ही की बन्दिगी उसे करनी है। जिन जिन शक्तियों का यह दावा है कि आदमी उनकी मर्ज़ी का अनुसरण करे, उनके आदेशों का पालन करे और अपनी हस्ती को

उन्हें सौंप दे। इन सब में से सिर्फ अल्लाह ही की हस्ती ऐसी है जिसके आगे आज्ञाकारी से गर्दन नवा देनी है और वही है जिसकी मर्ज़ी उसे ढूंढनी है। फिर मुसलमान होने के माने यह हैं कि हज़रत मोहम्मद (स0) ही को अपनी रहनुमाई के लिये चुन ले और फ़ैसला कर ले कि उसे आप के बताये रास्ते पर चलना है।

जिसने इस तरह से इस्लाम कुबूल किया उसका काम यह है कि अपनी इच्छाओं को अल्लाह की मर्ज़ी, इस्लाम के क़ानून और हज़रत पैग़म्बर(स0) के निर्देशों के अधीन कर दे। फिर उसके लिये मीन–मेख का कोई मौका शेष नहीं रहता। फिर उसे यह कहने का हक़ नहीं रहता कि यद्यपि अल्लाह तआ़ला ने इस मामले में यह हुक्म दिया है और अगरचे इसमें हज़रत पैग़म्बर (स0) ने यह दिशा निर्देश किया है और अगरचे कुरआन इस बारे में यह निर्णय देता है मगर मेरी राय उससे मेल नहीं खाती और मैं तो चलूंगा अपनी ही राय पर। या फिर यह कहे कि दुनिया का चलता हुआ तरीक़ा इसके विपरीत है और मुझे अनुसरण दुनिया के चलन सार का करना है तो यह रवैय्या जिस व्यक्ति का हो तो उसके बारे में समझ लेना चाहिये कि वह ईमान लाया ही नहीं है। यही बात है जिसे हज़रत पैग़म्बर (स0) यूँ बयान फ़रमाते हैं:–**^rqe esa ls dksbZ Q fDr eksfeu ugha gks ldrk tc rd mldh eukdkeuk;sa ml vkns'k ds v/khu u gks tk;sa tks eSa yk;k FkkA**

फिर इस्लामी ज़िन्दगी का अर्थ यह है कि आदमी में ज़िम्मेदारी का एहसास हो, मोमिन की ज़िन्दगी एक ज़िम्मेदार ज़िन्दगी होती है जिस दिल में ईमान मौजूद हो वह कभी इस एहसास से ख़ाली नहीं हो सकता कि उसे अपने जीवन भर के सारे कामों के लिये, विचारों के लिये खुदा के सामने जवाब देही करनी है। उसको मरने के बाद हिसाब देना है कि उसने क्या क्या किया। क्या कहा और क्या सुना। किन तरीकों से जीवन बिताया। किन संलग्नताओं में अपनी कूवतें और क़ाबिलीयतें लगाईं। किन साधनों से कमाया और किन राहों में अपना माल खर्च किया और किन उद्देश्यों के लिये दुनिया में कोशिशें की। मोमिन कभी इस ख़याल में नहीं फंसता कि हमें बस मरके मिट्टी हो जाता है और दुनिया से इसी तरह गुज़र जाता है कि दुनिया के किये धरे का काई परिणाम निकलेगा ही नहीं, वह पुख्ता यक़ीन रखता है कि इस जीवन के बाद फिर एक जीवन है जिसमें खुदा के सामने उपस्थित होके अपने एक एक काम,एक एक गति और एक एक क्षण का हिसाब देना है। इस चीज़ को हुज़ूर पैग़म्बर (स0) ने इन शब्दों में बताया है:– **^l ko/kku ! rqe esa ls i R;sd 'kk d gSv kS rqe esa ls i R;sd ls ml ds 'kkfl rksa ds ckjs esa iwNrkN gksxhA**

शासित (रईयत) से अभिप्राय वह सब कुछ है जो आदमी के चार्ज में होता है। चाहे वह बाल–बच्चे हों या नौकर, चाहे अधीनस्थ कार्यकर्ता हों या जानवर और जीवन सम्बन्धी सामान। जिस चीज़ पर भी किसी इन्सान का हुक्म चलता है और जो कोई भी उसके अधीन हो वही उसकी रईयत (शासित) है। इन अर्थों में दुनिया में कोई व्यक्ति भी शासित नहीं है। हर एक किसी न किसी

परिधि में शासक की हैसीयत रखता है। औरत घर की शासक है, मर्द बालबच्चों का शासक है अधिकारी अधीनस्थों का शासक है, सत्ताधारी या नरेश पूरी आबादी का शासक है। बहरहाल हर इन्सान किसी न किसी तरह का शासक अवश्य है, और कोई न कोई उसके चार्ज में अवश्य है। इन्हीं शासितों के सम्बन्ध में पैग़म्बर (स0) सचेत करते हैं कि :– **^l ko/kku jgks! rqEgsa vius [kqnk ds lkeus tokcnsgh djuh gksxh fd rqeus vius 'kkfl rksa ij v f/kdkjksa dk iz;ksx fdl izdkj fd;kA**

यह अक़ीदा और विश्वास मुसलमान की ज़िन्दगी को एक ज़िम्मेदाराना ज़िन्दगी बताता

है। मुसलमान कभी इस ढंग की ज़िन्दगी बसर नहीं कर सकता कि वह जो चाहे खाये, जो चाहे पहने, जिन कामों में चाहे, अपनी शक्ति और अपना समय लगाता रहे, जिधर मनोकामनायें ले जायें उधर आज़ादी से बढ़ता चला जाये। वह कोई छुट्टा जानवर नहीं होता कि जिस खेत में चाहे घुस जाये, जहाँ हरा चारा दिखे मुह मार दे और जिस रास्ते की ओर मुँह उठ जाय उसी पर दौड़ने लगे।''

मुसलमान की ज़िन्दगी का शुद्ध उदाहरण वह है जो हज़रत पैग़म्बर (स0) ने इस हदीस में बताया है :– ''**eqlyeku vkSj bZeku dk mnkgj.k ,sls gSa tSls [kwVsa ij c/kk ?kksMk gks ,sls gSa tSls [kwVsa ij c/kk ?kksMk gks ,sls gSa tSls [kwVsa ij c/kk ?kksMk**

मुसलमान जब ईमान और आज्ञाकारिता के ख़ूँटे से बंधा है तो रस्सी कितनी ही लम्बी क्यों न हो लेकिन वह घूम फिरकर एक ख़ास दायरे के अन्दर ही रूकता है उसकी हदों से बाहर नहीं जा सकता। वह अपनी सारी कूव्वतें और कोशिशें उसी सीमा के अन्दर लगाता है जो खुदा और रसूल (स0) ने उसके लिये नियत कर दी है। उसकी सारी दिलचस्पियाँ, सारे मनोरंजन, सारी सक्रियता और सभी गतिविधियाँ नियत सीमा के भीतर ही सीमित रहेंगी। इन हदों से बाहर जाने का साहस नहीं कर सकता।

ge D;k pkgrs gSa इस्लाम की इस संक्षिप्त व्याख्या (मुख़तसर तशरीह) के बाद अब मैं अर्ज़ करूंगा कि हम इस्लाम धर्म के सेवक और कार्यकर्ता क्या चाहते हैं ?

हमारा आवाहन सब लोगों के लिये यह है कि वह इस्लाम को जिसका यथार्थ यह है भली भाँति जांच के परख के यह निर्णय करें कि वह इसे अपने जीवन धर्म की भांति स्वीकारते हैं या नहीं। जैसा कि मैं पहले ही कह चुका हूँ इस्लाम जन्म से प्राप्त नहीं होता, वर्ण और गोत्र से नहीं मिलता अतः आवश्यक है कि यह सवाल आपके सामने रखा जाय और आपसे साफ़–साफ़ पूछा जाय कि आप सचमुच हंसी–खुशी इसे स्वीकार करते है या नहीं। आप उसके द्वारा लगायी गयी पाबन्दियों को सहन करने पर राज़ी हैं या नहीं ? आपको ईमान के खूँटे और आज्ञाकरी रस्सी से बंध जाना स्वीकार है या नहीं ? अगर किसी को यह धर्म पसन्द न हो और इस्लामी सिद्धान्तों और सीमाओं के अन्दर रहना गवारा न हो तो उसे पूरा अधिकार है कि वह इसे छोड़ दे। बहरहाल यह धोखा और मसख़रापन अब ख़त्म हो जाना चाहिये जो आजकल लोगों ने अपना रखा है कि इस्लाम 'पसन्द' भी नहीं है उसके अनुसरण पर राज़ी भी नहीं है, विचार और व्यवहार में उसे छोड़के अन्य तरीके अपना चुके हैं मगर आग्रह है कि हम मुसलमान है और मुसलमान कहे जाने पर आग्रह ही नहीं करते बल्कि इस्लाम के ध्वजावाहक और उसकी ओर से धर्म व्यवस्थापक (मुफ़्ती) भी बने फिरते हैं।

इसी तरह यह चलन भी खत्म हो जाना चाहिए कि इस्लाम की जो चीज़ें अपने हित और उद्देश्य के अनुरूप दिखें वह तो स्वीकार कर ली जायें और जो चीज़ें मनोंकाक्षाओं के अनुरूप न हों उन्हें रद्द कर दिया जाये। यह तो ''क्या तुम किताब के कुछ हिस्सों को मानते हो और कुछ का इन्कार करते हो'' को चरितार्थ करता है जिसका गिला हज़रत पैग़म्बर (स0) की ओर से यहूदियों से किया गया था कि ईश्वरीय ग्रन्थ से अपनी पसन्द की चीज़ें तो ले लेते हैं। और जो पसन्द न हो उसे रद्द कर देते हैं। यह इन्द्रिया पूजन और आकांक्षाओं की दास्तान का जारी सिक्का ईमान के नाम से नहीं चल सकता। हम प्रत्येक व्यक्ति के सामने यह प्रश्न रखते हैं और इसका दो टूक जवाब चाहते हैं इस्लाम तुम्हें अपनी जीवन पद्धति की हैसीयत से पसन्द है या नहीं ? पसन्द नहीं हैं तो कृप्या साफ़ इनकार

करो और पन्थ के परिक्षेत्र से बाहर हो जाओ और अगर पसन्द है और सचमुच तुम मुसलमान बनना चाहते हो तो सच्चे मन से उसे ग्रहण करो। इस्लाम के एक अंश या कुछ अंशों को नहीं बल्कि पूरे इस्लाम को लो। सीधी तरह आज्ञाकारिता का चलन इख़्तियार करो और इस्लाम को अपना दीन मान लेने के बाद फिर स्वतन्त्रता का दवा मत करो। इस्लाम आपकी इस आज़ादी को आपका हक़ नहीं मानता।

हम औरतों से निवेदन करते हैं कि वह अपने व्यक्तित्व को मर्दों के व्यक्तित्व में गुम न कर दें। अपने दीन को मर्दों के हवाले न करें वह मर्दों का दुमछल्ला नहीं हैं। उनकी अपनी एक अलग और अटल हस्ती है। औरतों को भी मर्दों ही की तरह ख़ुदा के सामने पेश होना है। अपने किये धरे का स्वतः हिसाब देना है। क़यामत के दिन प्रत्येक औरत अपनी ही कब्र से उठेगी। अपने बाप, पति, भाई (बेटे) की कब्र से नहीं उठेगी। अपने कार्यों का हिसाब देते समय वह यह कहकर न छूटेगी कि मेरा धर्म मेरे मर्दों से पूछों। अपनी जीवन पद्धति की वह ख़ुद ज़िम्मेदार है और उसे ख़ुदा के सामने इस बात का जवाब देना है कि वह जिस रास्ते पर चल रही है क्या सोच कर चलती है। अतः हम औरतों का सवाल मर्दों के सामने नहीं स्वतः औरतों के सामने प्रस्तुत करते हैं और उनसे कहते हैं कि अपने जीवन मार्ग का फ़ैसला तुम ख़ुद करो और इस बात की परवा किये बग़ैर करो कि तुम्हारे मर्दों का फ़ैसला क्या है ? इस्लाम तुम्हें अपने दीन की हैसीयत से पसन्द है या नहीं ? उसके सिद्धान्त, उसकी हदें, उसकी लगाई पाबन्दियाँ, उसके द्वारा डाली गयी ज़िम्मेदारियँ, मतलब यह कि सभी चीज़ें देख के निर्णय करो कि वह तुम्हें मान्य हैं या नहीं। अगर इन सब चीज़ों के साथ इस्लाम कुबूल है तो सच्चे मन से उसका अनुसरण करो, अधूरे ढंग से नहीं। पूरे इस्लाम को अपना दीन बनाओ और जान बूझकर उससे विमुख न हो।

यह बात एक मुद्दत से हम कह रहे हैं। अगर आपको हमारे लिटरेचर की कुछ जानकारी हो तो आप भी इस बात को जानती होंगी कि हमने हमेशा अपने साथियों और सहयोगियों से यही कहा है कि आप घर की औरतों मांओं, बहनों, बीवियों, बेटियों में इस्लाम का प्रचार अवश्य करें मगर ख़ुदा के लिये उन्हें अधिकार (क़व्वामीयत) के ज़ोर से अपने पथ की ओर न खींचें। उन्हें सोचने की, राय बनाने की पूरी आज़ादी दें। तब्लीग़ और आवाहन का हक़ बस इतना ही है कि आप इस्लाम के मुतालबे उनके सामने रखें, इसके बाद औरतों को इस बात का फ़ैसला खुद करने की आज़ादी होनी चाहिये कि उन्हें यह मांग स्वीकार है या नहीं।

□□□

¼cfd ;k i$ u0 7 dk]]]]]]]]]]]]]]]]]]]]]]½

इमाम ने फ़र्माया ''आप ग़लत समझ रहे हैं न अबू सलमा आप का शीआ है न अबू मुसिल्म खुरासानी और उस के लशकर वाले आप के शीआ हैं ''अब्दुल्लाह ने कहा ''नहीं यह लोग मेरे बेटे मोहम्मद को हाकिम बनाना चाहते हैं।'' जो इस उम्मत का मंहदी है इमाम (अ0) ने जवाब दिया कि '' न आप का बेटा मंहदी–ए–मौऊद है न उसे हुकूमत मिलेगी बलकि अगर आप के बेटे ने तलवार उठायी तो वह क़त्ल कर दिया जायेगा।'' अगरचे अब्दुल्लाह इमाम (अ0) से सिन में भी छोटे थे और इमाम उन का लिहाज़ भी करते थे मगर उन्हें यह बात सख़्त नागवार गुज़री और वह नाराज़ होकर पलट गये। इमाम ने उन्हें यह भी बता दिया कि अबू सलमा का क़ासिद पहले इमाम ही के पास आया था।

जब अबू सलमा का क़ासिद अब्दुल्लाह बिन हसन का जवाब लेकर कूफ़े पहुंचा तो वहाँ अबुल अब्बास सफ़्फ़ाह की बैअत हो चुकी थी।

□□□

मुख्य समाचार

efLtns vd+kij bljkbZyh >aMk uLc ugha gksus nsxsa% oysukuh otjs[kkjtk

10 नवम्बर को लेबनान के वज़ीरे ख़ारजा ने ताकीद के साथ कहा है कि मजिस्दे अक़सा पर इसराईली झंडा लहराने नहीं देगें। रिपोर्ट के मुताबिक लेबनान के वज़ीरे ख़ारजा जबरान बासील ने रियाज़ में अरब लीग के हंगामी इजलास के मौक़े पर कहा कि दहशतगर्दी की लानत ख़ास तौर से इसराईली हुकूमत की मुनज़्ज़म और हुकूमती दहशतगर्दी का मुक़ाबला करने के लिए अरब ममालिक़ के दरमियान इत्तेहाद की ज़रूरत है। जबरान बासील ने कहा की लेबनान तमाम फ़िलिस्तीनी मुहाजेरीन और पनाह गुज़ीनियों की अपने वतन वापिस और जिन मुलकों में वह सकुनत अख़्तयार किये हुये है। इन्हें मुल्कों में इनके लिये मुतबादिल वतन बनाने की साज़िश का सिलसिला ख़त्म किये जाने पर ताक़िद करता है। लेबनान के वज़ीरे ख़ारजा ने अक़वामे मुत्तहेदा में फिलिस्तीन का परचम नस्ब किये जाने के लिये न्यूयार्क में तमाम ममालिक के डट जाने को इत्तेहाद का एक कामियाब नमूना क़रार दिया और कहा कि हमें अपने इत्तेहाद से मसजिदे अक़सा पर इसराईली परचम की तनसीब रोक देना चाहिये और अरब ममालिक में दहशतगर्दी का ज़हर नहीं फ़ैलने देना चाहिये। लेबनान के वज़ीरे ख़ारजा ने मज़ीद कहा कि हमें फिलिस्तीनियों की हिमायत करनी चाहिये। जबरान बासील ने कहा कि हमें चाहिये कि हम फ़िलिस्तीनियों में ख़ुद मुख़तार फ़िलिस्तीनी ममलिक़त की तशकील की उम्मीद पैदा करें न कि उन्हें एक तारीक सियासी उफ़ूक़ के मुकाबिले में मायूस और तशद्‌दुद में तनहा छोड़ दें।

cgjSu esa 'kgfj;r lYc djus dk bdnke bUlkuh gqdwd+ rutheksa dk etEer hc;ku

7 नवम्बर को बहरैन की इन्सानी हुकूक़ की तनज़ीमों ने इस मुल्क के शहरियों के हुकूक़ सल्ब करने के आले ख़लीफ़ा हुकूमत के इक़दाम की मज़म्मत की है। मनामा पोस्ट की रिपोर्ट के मुताबिक बहरैन की इन्सानी हुकूक़ की तनज़ीमों ने जुमा को बहरैनी मुख़ालेफ़ीन की शहरियत सल्ब करने के मनामा हुकूमत के फ़ैसले को एक साल पूरा होने की मुनासिबत से एक बयान जारी किया है। इस बयान में इन्सानी हुकूक़ की तनज़ीमों ने कहा है कि मुख़ालिफ़ीन के ख़िलाफ़ हुकूमत की इस बा मक़सद पॉलिसी पर अमल दर आमद जारी रखे जाने का मक़सद, उनको सरकूब करना और उनके आज़ादि–ए–बयान पर पाबन्दी आएद करना है और ये इक़दाम बैनुल अक़वामी क़वानीन की खुल्लम खुल्ला ख़िलाफ़ वरज़ी है। इस बयान में बहरैनी शहरियों की शहरियत सल्ब करने के हुकूमती इक़दाम को सियासी मुख़ालिफन से इन्तेक़ामी कार्यवाही बताते हुये इसे बैनुल अक़वामी क़वानीन के ख़िलाफ़ वरज़ी करार दिया गया है और मुतालेबा किया गया है कि आले ख़लीफ़ा हुकूमत बहरैनी मुख़ालेफ़ीन की शहरियत सल्ब करने के मुजरेमाना एक़दाम से दस्तबरदार हो जाये और जिन की शहरियत सल्ब कर चुकी है उन्हें दोबारह शहरियत दे और उनका तआवुन करें।

bljkbZy efLftns vd+lk dks x$
eqfLyekasa dk Dyc cukuk pkgrk gS%

bekes efLtns vd+lk

मस्जिदे अक़सा के इमाम व ख़तीब शैख़ मुहम्मद सलीम ने 7 नवम्बर को अपने एक बयान में कहा कि इसराईल किब्ल–ए–अव्वल के स्टेटस को बरक़रार रखने का एलान करके मुकद्दस मक़ाम को यहूदियों और ग़ैर मुस्लिमों के लिए एक सयाहती क्लब बनाना चाहता है उनका कहना है कि मस्जिदे अक़सा मुसलमानों का तीसरा मुक़द्दस तरीन मक़ाम है। इसके तक़द्दुस की हिफ़ाज़त तमाम मुसलमानों पर वाजिब है। शैख़ मुहम्मद सलीम का कहना है कि इसराईली हुकूमत की तरफ़ से मस्जिदे अक़सा की मौजूदा हैसियत बरक़रार रखने का एलान तारीख़ी मुसल्लमात, मज़हबी तालीमात और आलमी क़वानीन की सरीह ख़ेलाफ़वर्ज़ी है। इसराईल ये दावा करता है कि मस्जिदे अक़सा जबले हैकल है और उसका दावा है कि इस जगह मुसलमानों को सिर्फ़ नमाज़ की अदाएगी का हक़ है। मुसलमानों के अलावह यहूदियों को भी यहां खुलेआम दाखिल होने मज़हबी रसमें अदा करने और सैरो सियाहत की ग़रज़ से हर गैर मुसलिम को दाख़िल होने का हक़ है। इसी को इसराईल मस्जिदे अक़सा का मौजूदा स्टेटस क़रार देता है। इमामे किब्ल–ए–अव्वल ने कहा कि जब अल्लाह तआला ख़ुद उसे मस्जिदे अक़सा का नाम देते हैं तो यहूदी किस तरह उसे जबले हैकल क़रार देते है मैं ये बात ज़ोर देकर कह सकता हूं कि मुसलमानों के सिवा किब्ल–ए–अव्वल का कोई दूसरा मालिको मुख़्तार नहीं है और ना ही किसी दूसरे मज़हब के पैरो कारों को इसमें दाख़िल होने का कोई हक़ हासिल है। उन्होंने अपने ख़िताब में कुछ सवालात उठाये और कहा कि क्या इसराईल ये चाहता है कि मस्जिदे अक़सा के मुराक़शी दरवाज़े को हर वक़्त यहूदी शर पसन्दों के आने जाने के लिये ख़ुला रखा जाये और इस दरवाज़े की चाबी सहयूनी पुलिस को दी जाये हर सुबह और दोपहर को यहूदी आबादकारों को किब्ल–ए–अव्ल में दाख़िल होने और मज़हबी रसमों की अदाएगी का हक़ दिया जाये। क्या मस्जिदे अक़सा में मुसलमान नमाज़ियों के लिये उम्र की क़ैद मुकर्रर की जाये? मस्जिदे अक़सा के मुहाफ़िज़ मर्दों और औरतों पर पाबन्दियाँ आएद की जायें? और क्या औरतों को किब्ल–ए–अव्वल से बे दख़्ल किया जाये? इसराईल दर असल यही चाहता है और इसी को मसजिदे अक़सा का मौजूदा स्टेटस करार दे कर उसे क़ायम रखना चाहता है। शैख़ मुहम्मद सलीम ने कहा कि मस्जिदे अक़सा का सन् 1967 से पहले वाला स्टेटस ही क़ाबिले क़बूल है इसके बाद इसराईली क़ब्ज़े वाली हैसियत किसी सूरत में क़ाबिले क़बूल नहीं है।

(cfd;+k i$ u0 12 dk)

क्योंकि ग़लत विचारधारा की काट ''एटमबम'' से कहीं अधिक हुआ करती है। इसके लिये बहुत अन्तरात्मा के प्रकाश, पैनी दृष्टि और धौंस से मुक्त मानस की आवश्यकता है। यह तभी सम्भव है जब हम ''दीन'' को ठीक पहिचानने वाले बनें, उसकी आत्मा में उतर जायें और साथ ही साथ समय के हाल–चाल और रुख़ का ठीकम–ठीक अन्दाज़ा किये रहें।